50

ऊँट की बीमारियाँ एवं उपचार

भाकृअनुप
ICAR

NATIONAL RESEARCH CENTRE ON CAMEL
BIKANER

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

पोस्ट बॉक्स नं. 07

बीकानेर-334 001 (राजस्थान)

ऊँट की बीमारियाँ एवं उपचार

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र
पोस्ट बॉक्स नं. 07
बीकानेर-334 001 (राजस्थान)

© राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

प्रकाशक
निदेशक
राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र
पोस्ट बॉक्स नं. 07
बीकानेर – 334001 (राज.)

मुद्रक
कल्याणी प्रिण्टर्स
माल गोदाम रोड,
बीकानेर–334001
दूरभाष : 526890

ऊँट की बीमारियां एवं उपचार

शुष्क एवं अर्द्धशुष्क रेगिस्तानी क्षेत्रों में ऊँट का विशेष महत्त्व है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि कार्य से लेकर, आवागमन, पानी व बोझा ढोने जैसे सभी कार्य ऊँट द्वारा किये जाते हैं। प्रतिदिन एक व्यक्ति ऊँट गाड़े द्वारा 100-150 रुपये ईंट, चूना, पत्थर व बजरी ढोकर कमा लेता है। कार्यक्षमता ऊँट के स्वास्थ्य व खान-पान पर निर्भर करती है। इसलिए ऊँट को स्वस्थ बनाये रखने के लिए हमें ऊँट से सम्बन्धित बीमारियाँ एवं उपचार की पूर्ण जानकारी होना आवश्यक है।

स्वस्थ वयस्क ऊँट के शरीर का तापक्रम 36° सेन्टीग्रेड से 38° सेन्टीग्रेड तक, श्वसन गति 6 से 11 प्रति मिनट, नाड़ी की गति 32 से 45 प्रति मिनट तक होती है।

रुग्ण ऊँट के मुख्य लक्षण :

रुग्ण ऊँट जुगाली करना बन्द कर देता है। चारा/दाना खाना बन्द कर देता है। नाक से पानी गिरने लगता है।

ऊँट की मुख्य बीमारियां :

(क) विषाणु जनित रोग
(ख) जीवाणु जनित रोग
(ग) परजीवी जनित रोग
(घ) पोषक तत्त्वों की कमी से उत्पन्न रोग
(ङ) तन्त्र की बीमारियां
(च) अन्य

क. विषाणु जनित रोग :

विषाणु (वायरस) जनित बीमारियों में ऊँट माता, कन्टेजियस एक्थाइमा, रेबीज़ आदि मुख्य हैं।

(1) कैमल पॉक्स (माता रोग, चेचक) :

यह रोग 'उष्ट्र मसुरिका' विषाणु द्वारा गर्मी व बरसात के मौसम में होता है। 6 महीने से 2 साल के बच्चे में अधिक सम्भावना रहती है। रोग अवधि 2-4 सप्ताह तक की होती है।

एक बार रोग से पीड़ित होने पर इस रोग के प्रति- प्रतिरोधक क्षमता उत्पन्न हो जाती है।

लक्षण :

होठों, गुदा, जननांगों एवं पैरों के चारों ओर छोटी-छोटी फुन्सियां देखने को मिलती हैं, जिन्हें पैप्यूल्स कहते हैं। पैप्यूल्स वेसीकल्स (फाले) में बदल जाते हैं। जब वेसीकल्स में मवाद भर जाता है तो उन्हें पसच्यूल्स कहते हैं, जो सूखने पर खरूँट बन जाता है। कई बार रोग ठीक होने के पश्चात् पैरों में कम्पन्न रह जाती है। ऊँट बहुत कमजोर हो जाता है। चारा खाना छोड़ देता है एवं बुखार रहता है।

उपचार :

1. रोगी ऊँट को अन्य ऊँटों से अलग कर देना चाहिए।
2. गीले घाव पर केलेमाईन लोशन, जिंक ऑक्साइड, पोविडॉन आयोडीन लगाना चाहिये, जबकि सूखे खरूँट पर पोविडोन आयोडीन, एन्टीसेप्टिक मल्हम लगावें।

(2) कन्टेजियस एक्थाइमा :

यह 'ओरफ वायरस' जनित रोग है। वायरस मुँह एवं होंठ की फटी चमड़ी द्वारा शरीर में प्रवेश करते हैं। खरूँट भी रोग स्रोत का काम करते हैं। रोग की अवधि 7-10 दिनों की होती है।

लक्षण :

पैप्यूल्स (फुन्सियां), वैसीकल्स (फाले), पसच्यूल्स, खरूँट/अल्सर, मुँह, नथुनों, होठों के किनारों पर देखने को मिलते हैं। इस कारण ऊँट सही ढंग से खा नहीं सकता और कमजोर हो जाता है। रोग की अधिक तीव्रता से दूसरे अन्य जीवाणु जनित रोग हो जाते हैं। बच्चों में मोरबिडिटी 100 प्रतिशत तक हो जाती है, पर वयस्कों में 10-20 प्रतिशत तक पाई जाती है।

उपचार :

1. लाल दवा 0.01 - 0.02 प्रतिशत, 1 प्रतिशत आयोडीन

या नीला थोथा (कॉपर सल्फेट) के 5 प्रतिशत घोल से खरूँट उतारकर अच्छी तरह धोयें।

2. अन्य जीवाणु जनित बीमारियों की रोकथाम के लिए ऐन्टीबायोटिक दवा देवें।

(3) रेबीज़, हीड़काव, जल आतंक, पागल होना :

यह रोग 'लाहसा वायरस' से होता है। अधिकतर पागल कुत्ते या जंगली जानवरों के काटने से होता है। यह विषाणु उनके थूक व लार में रहता है।

लक्षण :

ऊँट खाना-पीना बन्द कर देता है। मुँह से लार गिरने लगती है। ऊँट बहुत अधिक उत्तेजित हो जाता है। स्वयं को या फिर दूसरे जानवरों को काटने दौड़ता है। चमकती आँखें व सिर अधिक ऊँचाई लिए हुए होता है। पास की चीजों को बार-बार काटना आदि।

उपचार :

ऊँट के पागल हो जाने के बाद कोई उपचार नहीं है। ऊँट को मार देना बेहतर है। मरे पशु को जला देना चाहिए।

निदान :

संदेहास्पद ऊँटों के घाव को साबुन, पानी या फिर ऐन्टीसेप्टिक लोशन से अच्छी तरह धो देना चाहिये। घाव को खुला छोड़ देवें। ऐन्टीरेबीज़ वैक्सीन (5 प्रतिशत) के टीके 60 मि.ली. मात्रा में 14 दिनों तक लगावें।

ख. जीवाणु जनित रोग

मुख्य रोग एन्थ्रेक्स, हिमोरेजिक सेप्टीसीमिया, ब्लैक क्वार्टर, कन्टेजियस नेक्रोसिस, सालमोनेलोसिस मुख्य हैं।

(1) एन्थ्रेक्स, प्लीहा ज्वर, गिल्टी रोग

यह रोग 'बैसीलस एन्थ्रासिस' जीवाणु द्वारा होता है। यह एक भयंकर संक्रामक रोग है, जो ऊँट से मनुष्य में भी हो सकता है। पीड़ित मनुष्य के शरीर पर मवाद युक्त फुंसियाँ हो जाती हैं।

लक्षण :

जल्दी व अचानक दो से चार घण्टे में ऊँट मर जाता है। मुँह एवं गुदा से स्याही मायल रंग (गहरा लाल, काला रंग) का खून निकलता है। बहुत तेज बुखार (41^0-42^0 सेन्टीग्रेड) होता है। चमड़ी के नीचे सोजन आ जाती है।

बचाव :

एन्थ्रेक्स स्पोर वैक्सीन 1 मि.ली. चमड़ी के नीचे लगाने से रोग नहीं होता है। प्रतिरक्षा 9-12 महीने तक रहती है, पर यह टीका बीमारी वाले क्षेत्र में ही लगाना चाहिये।

उपचार :

1. पेनीसिलिन इन्जेक्शन 10,000 यूनिट/कि.ग्रा. वज़न पर दिन में दो बार माँसपेशियों में लगावें।
2. ऑक्सीटेट्रा-साइक्लीन 5-10 मि.ग्रा./कि.ग्रा. वज़न पर माँसपेशियों में लगावें।
3. क्रिसटेलाइन पेनीसिलिन 50,000 यूनिट/कि.ग्रा. नाड़ी में।

रोकथाम :

मृत ऊँट को जला देना चाहिये या फिर 4-5 फुट गहरा गड्ढा करके चूना डालकर दबा देना चाहिये।

(2) हिमेरेजिक सेप्टीसीमिया (गल घोंटू) :

यह बीमारी 'पास्चुरेला' किस्म के जीवाणुओं द्वारा होती है। ऊँटों में यह रोग कम होता है। बीमार पशु के खून व शरीर के अन्य अवयवों द्वारा यह बीमारी फैलती है।

लक्षण :

अचानक गर्म, दर्दनाक सोजिश गले व कंधों पर हो जाती है। तेज बुखार आता है। सूजन की वजह से सांस लेने में कठिनाई आती है।

बचाव :

मानसून आरम्भ होने से पहले रोग से बचाव हेतु टीके लगवा लेने चाहिये।

1. बैफ एच.एस. वैक्सीन- 2.5 मि.ली. मात्रा चमड़ी के नीचे लगावें। प्रतिरक्षा एक वर्ष तक रहती है।

2. एच.एस. और बी.फ्यू वैक्सीन- 5 मि.ली. मात्रा में 6 माह से अधिक आयु के बच्चों में चमड़ी के नीचे लगावें, प्रतिरक्षा एक साल तक रहती है।

उपचार :

1. आरम्भिक अवस्था में सल्फोनामाइड शिरा (नस) में लगावें।

अ. सल्फामेजाथीन घोल और सोडियम सल्फाडीमिडीन 150 मि.ग्रा./कि.ग्रा. शारीरिक भार पर 3-4 दिन तक देवें।

ब. ऑक्सीटेट्रा साईक्लीन- 5-10 मि.ग्रा./कि.ग्रा. भार पर 3-4 दिन तक देवें।

स. ऐम्पीसिलीन/क्लोरमफेनिकॉल- 10 मि.ग्रा./कि.ग्रा. शरीर भार पर लगावें।

लक्षणों के आधार पर मात्रा कम या अधिक की जा सकती है।

बचाव :

बीमारी वाले क्षेत्रों में सभी ऊँटों को मानसून पूर्व वैक्सीन दे देनी चाहिये।

(3) कन्टेजियस स्किन नेक्रोसिस (झूलिंग, झूलन) :

यह एक छूत की बीमारी है जो एक ऊँट से दूसरे ऊँट में तेजी से फैलती है तथा 'स्ट्रेपटोकोकाई' जीवाणु द्वारा होती है। यह बीमारी सिर्फ ऊँटों में पाई जाती है। नमक की कमी इस रोग के होने में सहायक है।

लक्षण :

इस बीमारी में चमड़ी पर सोजिश होती है व खुजली चलती है। खुजाने पर जख्म बन जाते हैं। फिर पीव यानि मवाद बन जाती है। मख्खियों द्वारा अण्डे देने पर कीड़े पड़ जाते हैं।

उपचार :

1. मवाद निकाल कर जख्म पर ऐन्टीसेप्टिक मल्हम लगावें।

2. बीमार ऊँट को 100-150 ग्राम नमक देने पर जल्दी ठीक होता है।

(4) ब्लैक क्वार्टर :

यह रोग 'क्लास्ट्रीडियम' किस्म के जीवाणु द्वारा होता है। ऊँट में यह बीमारी बहुत कम देखने में आती है।

लक्षण :

पिछले पुट्ठों पर सोजिश आ जाती है। हाथ से थपथपाने पर चड़-चड़ की आवाज़ आती है।

बचाव :

एच.एस. और बी.क्यू. वैक्सीन लगावें।

उपचार :

1. पेनीसिलिन 10,000 यूनिट/कि.ग्रा. भार 3-4 दिन देवें।

2. क्रिस्टेलाईन पेनीसिलिन मांसपेशी में और फिर प्रोकेन पेनीसिलिन सीधे शिरा (नस) में देना चाहिए।

3. जिस मॉसपेशी पर सूजन हो, चीरा लगाकर हाइड्रोजन परॉक्साइड या पोंटैशियम परमेंगनेट से धोवें व उस स्थान पर पेनीसिलिन इंजेक्शन लगावें।

(5) सालमोनेलोसिस :

यह 'सालमोनेला' जीवाणु जनित रोग है। यह बीमारी ऊँट के बच्चों में अधिकतर होती है। रोग की अवधि 3-7 दिन होती है। संक्रमित पानी के द्वारा यह रोग फैलता है।

लक्षण :

पहले स्याह हरे रंग के दस्त लगते हैं। बाद में खून आने लगता है। बुखार हो जाता है। ऊँट कमजोर हो जाता है। मरने से एक-दो दिन पहले तापक्रम सामान्य हो जाता है।

उपचार :

1. इन्जेक्शन क्लोरमफेनिकॉल 5 मि.ग्रा./कि.ग्रा. 5 दिनों तक माँसपेशियों में लगावें।

2. ट्राईमेथोप्रिम + सल्फामेथाक्साजॉल वोलस जैसे एन्ट्रीमा/ओरिप्रिम बड़े ऊँट को 8-10 वोलस तथा छोटे ऊँट को 1-2 बोलस देवें।

3. पानी की कमी को दूर करने के लिए 0.9 प्रतिशत नॉर्मल सेलाईन शिरा में देवें।

4. दस्त दूर करने के लिए एस्ट्रीजेन्ट पाउडर जैसे केओलिन व कटेचु देवें।

(ग) परजीवी जनित रोग :

परजीवी जनित रोग मुख्य रूप से प्रोटोजोआ, आन्तरिक परजीवी एवं बाह्य परजीवी के द्वारा होते हैं।

1. प्रोटोजोआ संक्रमण

प्रोटोजोआ संक्रमण में सर्रा (ट्रिपेनोसोमियासिस), कोक्सडियोसिस, एनाप्लाज्मोसिस, टोक्सोप्लाज्मोसिस, सर्को स्पोरीडियोसिस है; ऊँटों में सर्रा बहुतायत में देखने को मिलता है।

सर्रा, तिबर्सा, ट्रिपेनोसोमियासिस :

यह ऊँटों में पाया जाने वाला भयंकर जान लेवा रोग है। यह रोग 'ट्रिपेनोसोमा ईवानसाई' नामक रक्त परजीवी प्रोटोजोआ के कारण होता है। परजीवी ऊँट के शरीर में एक विशेष प्रकार की मक्खी के काटने पर प्रवेश करता है।

लक्षण :

यह रोग दो रूपों में हो सकता है- (अ) तीव्र और (ब) दीर्घकालीन।

(अ) तीव्र अवस्था :

तीव्र अवस्था में रोग की अवधि 10 से 20 दिन की होती है।

लक्षण :

1. ऊँट अचानक बहुत कमजोर हो जाता है।
2. अचानक ही मर जाता है।

(ब) दीर्घकालीन अवस्था :

रोग की अवधि 3-4 वर्ष तक हो सकती है।

लक्षण :

1. रुक-रुककर बुखार आता है।
2. ऊँट का वज़न कम हो जाता है।
3. आँख से गीड़ एवं पानी बहना, आँख की झिल्ली का सफेद हो जाना।
4. आँखों के ऊपरी हिस्से एवं शरीर के नीचे के हिस्सों में सूजन आना, जैसे- अयन के चारों तरफ पेरिनियल भाग में सूजन आना।
5. मादा ऊँट गर्भ गिरा देती है।
6. मींगने छोटे व तिकोने आकार के होते हैं।

उपचार :

1. सुरामिन 10 ग्राम घोल बनाकर देवें। यह नागानोल, बेयर 205 एन्ट्रीपोल नाम से बाजार में उपलब्ध है।
2. क्यूनेपायेरेमिन सल्फेट (एट्रीसाईट) 4 मि.ग्रा./कि.ग्रा. वज़न पर देवें।
3. ट्राईवेक्सीन (क्यूनेपायरेमिन प्रोसाल्ट) 2.5 ग्राम दवाई बचाव व ईलाज के लिए 3-5 ग्राम मात्रा देवें।

बचाव :

1. रोग ग्रस्त ऊँट को स्वस्थ ऊँटों से अलग कर देना चाहिए।
2. रोग फैलाने वाले परजीवी नष्ट करने के लिए फिनिट का छिड़काव करें।
3. बीमारी वाले क्षेत्रों में सुरामिन दवा बचाव हेतु देवें।

2. आंतरिक परजीवी जनित रोग

आंतरिक परजीवी मुख्यतः फ्ल्यूकस (पर्णाभ कृमि), टेपवर्म (चपटे कीड़े), राउण्ड वर्म (गोल कृमि) होते हैं।

(क) फ्ल्यूकस :

ऊँट में यकृत केपल्यूकर संक्रमण फेसियोला हिपेटिका एवं फेसियोला जाईजेन्टिका द्वारा होता है। ऊँट में खून चूसने वाले फ्ल्यूकस में सिस्टेसोमिएसिस स्पीसीज़ भी देखी गई है।

टेपवर्म (चपटे कीड़े) इकानोकोकस

पोलीमोरकस की हाइडेटिड सिस्ट और टीनिया मारजीनेटा के सिस्टहसरकेरिया सिस्ट में देखे गये हैं।

(ख) गोल कृमि :

सामान्यतः पाये जाने वाले गोल कृमि निम्न हैं :

1. आनेकोसेरका आरमिलेटा- नोड्यूल्स बनाने वाले गोल कृमि
2. आनकोसेरका- कुसियेटा
3. फिलोरियल परजीवी- डिवेटेलोनीमा ईवान्साई
4. आई-वर्मस- थेलेजिया लीसाई
5. पेट एवं आंतों के परजीवी- निमेटोडिरस ट्राईचूरिस स्ट्रगेलोईडस और टिमानकस

लक्षण :

भूख कम होने के साथ ही ऊँट धीरे-धीरे दुबला हो जाता है। दस्त में खून एवं आँव भी आ सकती है।

निदान :

मींगनों की जांच करने पर कृमि के अण्डे पाये जाते हैं।

उपचार :

दवा देने से पहले ऊँट को रात को कुछ न खिलावें और सुबह दवा देकर दो घण्टे तक कुछ न देवें। मींगनों की जांच करावें। अगर कृमि के अण्डे हों तो पुनः एक खुराक और देवें।

- नीलवोर्म (टेट्रामिजोल) प्रति कि.ग्रा. वज़न पर 15 मि.ग्रा. देवें।

- पानाकुर (फेनबेण्डाजोल) 5 मि.ग्रा. प्रति किलो वज़न पर देवें।

- पारबेण्डाजोल 5 मि.ग्रा. प्रति कि.ग्रा. वज़न पर देवें।

3. बाह्य परजीवियों से होने वाली छूत की बीमारियाँ :

बाह्य परजीवी शरीर के ऊपर रहते हैं, जैसे- चीचड़, जुएँ व माइट।

खुजली, पॉव (मेन्ज)

ट्रिपेनोसोमियासिस के बाद मेन्ज ऊँटों में सबसे अधिक नुकसानदायक होती है। ऊँटों में यह बीमारी 'सारकोप्टिस केमेलाई' द्वारा होती है। यह बीमारी रोगी ऊँट से स्वस्थ ऊँटों में तेजी से फैलती है।

लक्षण :

1. काछों, पेट, उदर, पिछली जांघों, पूँछ का निचला हिस्सा सबसे पहले प्रभावित होते हैं।

2. बाल झड़ने से धब्बे बन जाते हैं। चमड़ी सूखने लगती है, मोटी व सलवटों युक्त हो जाती है।

3. खुजली आने पर बेचैन ऊँट शरीर को दीवार, वृक्ष से रगड़ता है, जिससे खून आने लगता है व घाव पड़ जाते हैं। दीर्घकालीन मेन्ज में सफेद चाक युक्त रेत-सी दिखने वाली शुष्क चमड़ी हो जाती है।

उपचार :

1. गन्धक (सल्फर) + लिंडेन + तेल लगावें।

2. बेन्जाईल बेन्जाकएट, क्लोरटेन, लिंडेन 0.05 प्रतिशत 8 दिन के अंतराल पर दो बार लगावें।

3. आरगेनोफास्फोरस युक्त दवाई जैसे डेल्टा मेथरिन 0.4 प्रतिशत का स्प्रे करें।

4. इन्जेक्शन आइवरमेक्टिन 200-400 मि.ग्रा./कि.ग्रा. वज़न पर देवें।

5. हीमेक्स लोशन व हीमेक्स ओयन्टमेन्ट भी उपयोगी रहता है।

6. साथ में ऐन्टीहिस्टामिनिक जैसे एविल, यकृत रस (लीवर एक्सट्रेक्ट), बी-कॉम्पलैक्स भी उपचार में सहायक रहता है।

(घ) पोषक तत्त्वों की कमी से होने वाली बीमारियां :

पोषक तत्त्वों की कमी से होने वाली बीमारियां मुख्यतः खनिज लवणों व विटामिन्स की कमी से होती हैं। ऊँट में नमक, कैल्शियम व फास्फोरस की कमी साधारणतया पायी जाती है। इस कमी को प्रतिदिन 50 ग्राम खनिज लवण और नमक देकर दूर किया जा सकता है। विटामिन 'ए' की कमी से रतौंधी रोग हो जाता है। विटामिन 'ए' की 18 लाख से 36 लाख यूनिट का इन्जेक्शन लगाकर कमी दूर की जा सकती है। पेट में कीड़े होने पर विटामिन 'बी' की कमी हो सकती है, जिसमें यकृत रस (लीवर एक्सट्रेक्ट) के टीके लगवायें। खनिज लवणों की कमी के कारण टोरडा/टोरडी मिट्टी, चूना, ईंटें वगैरह चाटना/खाना शुरू कर देते हैं। इसको पाइका कहते हैं। ऐसी स्थिति में कैल्शियम, फॉस्फोरस जैसे खनिज लवणों की पूर्ति के साथ-साथ पेट के कीड़े मारने की दवाई देनी चाहिए।

(ङ) तन्त्र के रोग :

अधिकांशतः निम्न बीमारियां ऊँट में देखने को मिलती हैं :

1. अपच
2. पेट का बन्द पड़ना
3. आफरा
4. दस्त लगना
5. जर का न गिरना
6. निमोनिया

1. अपच :

ऊँटों में अपच के कारण चारा बदलना, घटिया किस्म

का चारा खिलाना, अधिक चारा या दाना खिलाना, समय पर चारा या दाना न मिलना, अधिक उम्र, कमजोरी एवं पाईका मुख्य हैं। यह बीमारी ऊँट में प्रायः देखने को मिलती है।

लक्षण :

ऊँट चरना कम कर देता है। जुगाली नहीं करता या फिर कम करता है। सुस्त हो जाता है। अपच में मींगने न करके गोबर करता है या कब्ज हो जाती है। कभी-कभी पेट में दर्द होता है।

कब्ज होने पर उपचार :

1. मैगनिशियम सल्फेट 400 ग्राम + मैगनिशियम कार्बोनेट 200 ग्राम।
2. सोडियम बाईकार्बोनेट 50-100 ग्राम तीन दिन तक देवें।
3. हिमालय बतीसा 100 ग्राम रोजाना दो बार, तीन दिन तक देवें।
4. रुमीनल पी.एच. क्षारीय हो तो ऐसीटिक एसिड घोल (5-10 प्रतिशत), 200-500 मि.ली. तक मुँह से देवें।
5. इन्जेक्शन बेलामिल एक दिन के अन्तराल पर तीन दिन लगावें।
6. रुमन की कार्यगति को बढ़ाने के लिए नक्सवोमिका/जिन्जर/अमोनियम क्लोराईड, एनोरेक्सोन, रुमनेटोन गोलियां देवें।

2. पेट का बन्द पड़ना :

ऊँटों में मुख्यतः क्षारीय अपच होता है। अपघटित चारा और दाना खाने से, दुर्घटनावश अधिक मात्रा में कार्बोहाइड्रेट एवं प्रोटीन युक्त दाना खाने से, चारे की किस्म व मात्रा में अचानक बदलाव मुख्य कारण हैं।

लक्षण :

रोग से पीड़ित ऊँट खाना-पीना बन्द कर देता है। जुगाली

नहीं करता है। कब्ज के लक्षण देखने को मिलते हैं। यदि मींगने करता है तो काफी सख्त करता है। बायीं ओर पेट पर हाथ लगाने पर सख्त महसूस होता है।

उपचार :

1. यदि रयूमिनल पी.एच. अम्लीय है तो मैग्निशियम सल्फेट 500 से 1000 ग्राम, सोडियम क्लोराईड (नमक) 500 ग्राम, सोडियम बाईकार्बोनेट 200 ग्राम एक साथ मिलाकर पिलावें।

2. अगर रयूमिनल पी.एच. क्षारीय है तो 5-10 प्रतिशत ऐसीटिक ऐसिड/कि.ग्रा. वज़न पर देवें व 5 प्रतिशत डेक्सट्रोज़ सेलाईन देवें।

3. यकृत रस (लीवर एक्सट्रेक्ट) तीन से पांच दिन तक देवें।

बचाव :

1. 2 प्रतिशत सोडाबाईकार्ब आहार में देवें।

3. आफरा :

यह बीमारी ऊँटों में बहुत कम देखने को मिलती है। इसमें बायीं तरफ का पेट फूल जाता है। हाथ लगाने पर हवा भरी महसूस होती है तथा थपथपाने पर ड्रम बजाने जैसी आवाज़ आती है। सांस लेने में तकलीफ होती है।

उपचार :

1. बहुत अधिक आफरा होने पर ट्रोकार और केनुला बायीं तरफ पेट में डालकर हवा निकाली जाती है।

2. तारपीन का तेल 50-60 मि.ली. व मीठा तेल 250-400 मि.ली. मिलाकर पिलावें।

3. टिम्पोल 80 ग्राम गुनगुने पानी के साथ पिलावें।

4. बलोटोसिल 100 मि.ली. सीधे रूमन में डालें।

4. दस्त लगना :

साधारणतया ऊँट में दस्त मात्र चारे से भी लग जाते

हैं। दस्त या तो अपने आप ठीक हो जाते हैं, अन्यथा उपचार की आवश्यकता होती है। ऊँट मींगने न करके पतला गोबर करता है। गोबर के साथ खून एवं आँव भी देखने को मिलता है। कभी-कभी बुखार भी हो सकता है।

कारण :

1. जीवाणु (बैक्टीरिया)
2. विषाणु (वायरल)
3. परजीवी (पैरासाईट)

लक्षण :

1. गोबर के साथ खून एवं आँव आना।
2. वायरस जनित दस्त में बुखार हो जाता है।
3. पानी की कमी हो जाती है।

उपचार :

1. साधारण दस्त :

1. नेब्लोन पाउडर 50-100 ग्राम
2. डायरडॉन पाउडर 50-100 ग्राम
3. डायरिया किलर 50-100 ग्राम

2. जीवाणु के कारण लगे दस्त :

1. सल्फाडिमिडीन 25 से 40 ग्राम तक। 5 से 8 बोलस दिन में दो बार तीन दिन तक देवें।

2. एन्टीमा 8-12 बोलस दिन में दो बार तीन दिन तक देवें।

3. फ्यूराजोलीडॉन 2-4 मि.ग्रा./कि.ग्रा. वज़न पर 5 दिन तक देवें।

3. परजीवी के कारण लगे दस्त

1. फेनवेण्डाजॉल 1.5-3.0 ग्राम
2. टेट्रामिजोल 15-20 ग्राम
3. पारबेण्डाजॉल 60-100 ग्राम दवा खाली पेट देवें।

4-6 घण्टे तक चारा नहीं देना चाहिए। दवा 2 से 3 सप्ताह बाद पुनः देनी चाहिए।

5. जर का न गिरना :

मादा ऊँट के बच्चा होने के बाद चार से छः घण्टे तक जर गिर जानी चाहिए। यदि छः घण्टे तक जर न गिरे तो उसका उपचार कराना आवश्यक है।

उपचार :

यूटेरेटोन- 100 मि.ली. दिन में दो बार, फ्यूरिया 4 बोलस, बच्चादानी के अन्दर रखे, टेरामाईसिन इन्जेक्शन 30 से 50 मि.ली. 3 से 5 दिन तक देवें। जर को खींच कर नहीं निकालना चाहिए।

6. निमोनिया :

यह रोग साधारणतया सर्दी के मौसम में होता है। निमोनिया के कारण ऊँट के बच्चों में मृत्यु अधिक होती है, क्योंकि ऊँटों में जनन काल शीत ऋतु में होता है। रोग से पीड़ित ऊँट के बच्चे के नाक से पानी अथवा रेशा बहता है। शरीर का तापक्रम बढ़ जाता है। सांस छोटे एवं कम गहरे व जल्दी-जल्दी लेता है। नाल देते समय दी जाने वाली दवाई अगर श्वास नली में चली जाती है तो ड्रेचिंग निमोनिया हो जाता है।

उपचार :

1. सल्फाडिमीडीन 33.33 प्रतिशत- 30 मि.ली./50 कि.ग्रा. वज़न पर आधी-आधी खुराक, तीन से पांच दिन तक एविल या केडिस्ट्रीन, सांस में अधिक तकलीफ होने पर एड्रीनलीन इन्जेक्शन देवें।

2. पेनीसिलीन इन्जेक्शन- बड़े ऊँट को 40 लाख इकाई पांच दिन तक व ऊँट के छोटे बच्चे को 20 लाख इकाई पांच दिन तक देवें।

(च) अन्य

घाव में कीड़े पड़ना :

ऊँट के शरीर पर बने घाव पर जब मक्खियां बैठती हैं तो अण्डे दे देती हैं। यह अण्डे डिम्भ में बदल जाते हैं तथा बड़े होकर सफेद छोटे कीड़े बन जाते हैं और गहरा घाव बना देते हैं। ऊँट में नाक के अन्दर पाये जाने वाले सिफेलोपिना टीटीलोर अरगेस्टर फेवर, इस्टरस आविस मुख्य हैं। बहुत अधिक कीड़े होने पर स्नायुतन्त्र भी प्रभावित हो जाता है।

उपचार :

1. घाव के चारों तरफ का स्थान बाल काटकर साफ कर देना चाहिए।

2. रूई को तारपीन के तेल में भिगोकर घाव के अन्दर भरें, जिससे सभी डिम्भ निकल जायेंगे। यह प्रक्रिया सभी डिम्भ निकलने तक करें।

3. लारेक्सान, हिमेक्स मल्हम/नीम का तेल लगावें।

4. नाइट्रोआक्सीनिल का इन्जेक्शन चमड़ी में लगाने पर भी कीड़े मर जाते हैं।

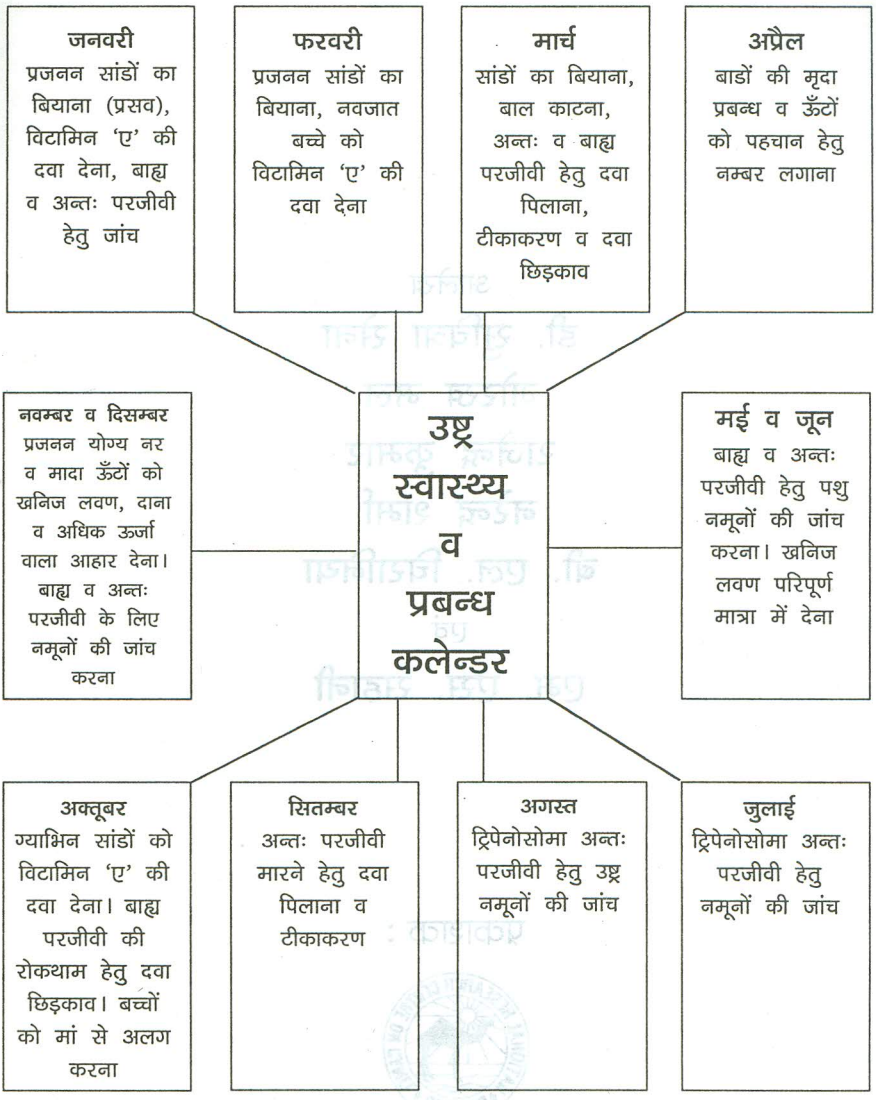

उष्ट्र स्वास्थ्य व प्रबन्ध कलेन्डर

जनवरी
प्रजनन सांडों का बियाना (प्रसव), विटामिन 'ए' की दवा देना, बाह्य व अन्तः परजीवी हेतु जांच

फरवरी
प्रजनन सांडों का बियाना, नवजात बच्चे को विटामिन 'ए' की दवा देना

मार्च
सांडों का बियाना, बाल काटना, अन्तः व बाह्य परजीवी हेतु दवा पिलाना, टीकाकरण व दवा छिड़काव

अप्रैल
बाडों की मृदा प्रबन्ध व ऊँटों को पहचान हेतु नम्बर लगाना

मई व जून
बाह्य व अन्तः परजीवी हेतु पशु नमूनों की जांच करना। खनिज लवण परिपूर्ण मात्रा में देना

जुलाई
ट्रिपेनोसोमा अन्तः परजीवी हेतु नमूनों की जांच

अगस्त
ट्रिपेनोसोमा अन्तः परजीवी हेतु उष्ट्र नमूनों की जांच

सितम्बर
अन्तः परजीवी मारने हेतु दवा पिलाना व टीकाकरण

अक्तूबर
ग्याभिन सांडों को विटामिन 'ए' की दवा देना। बाह्य परजीवी की रोकथाम हेतु दवा छिड़काव। बच्चों को मां से अलग करना

नवम्बर व दिसम्बर
प्रजनन योग्य नर व मादा ऊँटों को खनिज लवण, दाना व अधिक ऊर्जा वाला आहार देना। बाह्य व अन्तः परजीवी के लिए नमूनों की जांच करना

आलेख

डी. सुचित्रा सेना

गोरख मल

राजेन्द्र कुमार

नरेन्द्र शर्मा

बी. एल. चिरानिया

एवं

एम. एस. सहानी

प्रकाशक :

निदेशक

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

पोस्ट बॉक्स नं. 07,

बीकानेर-334001 (राजस्थान)

आलेख

डी. सुचित्रा सेना

गोरख मल

राजेन्द्र कुमार

नरेन्द्र शर्मा

बी. एल. चिरानिया

एवं

एम. एस. सहानी

मुद्रक : कल्याणी प्रिण्टर्स, बीकानेर. दूरभाष : 526890